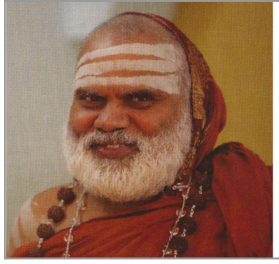

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

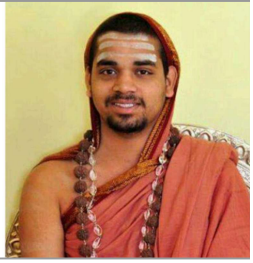

Sri Shankara Jayanti Special Edition

We submit our efforts at the Lotus feet of Jagadguru Śankarācārya His Holiness Mahāsannidhānam Śrī Śrī Srī Bhāratī Tīrtha Mahāswāmiji and Jagadguru Śankarācārya His Holiness Sannidhānam Śrī Śrī Śrī Vidhuśekhara Bhāratī Mahāswāmiji

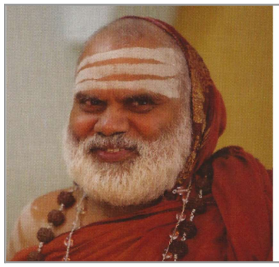

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

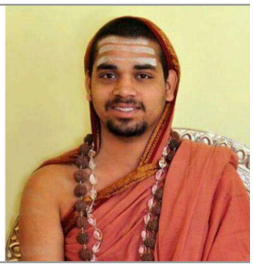

अनुग्रह भाषण

दृढ़ संकल्प के साथ ज्ञान प्राप्त करें

---हर किसी को कम उम्र में ही सीखना शुरू कर देना चाहिए। उस दौरान, सुख-सुविधाओं की कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए। जो भी असुविधाएँ हों, उन्हें धैर्य के साथ सहन करना चाहिए। ज्ञान ही एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए और उसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को दृढ़ संकल्पित होना चाहिए। केवल ऐसा व्यक्ति ही उचित शिक्षा प्राप्त कर पाएगा और एक विद्वान बन सकेगा।

---प्राचीन काल में (समुद्र मंथन से पहले, जिसके परिणामस्वरूप देवताओं को अमरत्व प्राप्त हुआ था), देवता (अदिति के पुत्र) और असुर (राक्षस, दिति के पुत्र) अक्सर आपस में युद्ध करते थे। दोनों ही पक्षों को जान-माल का नुकसान होता था; लेकिन असुरों के गुरु, शुक्राचार्य, 'मृत संजीवनी' (मृत व्यक्तियों को पुनर्जीवित करने की कला) जानते थे। उन्होंने सभी मृत राक्षसों को पुनर्जीवित कर दिया। हालाँकि, देवताओं के गुरु, बृहस्पति, इस कला को नहीं जानते थे। इसलिए वे मृत देवताओं को पुनः जीवित नहीं कर सके। इस स्थिति ने देवताओं को भारी संकट में डाल दिया।

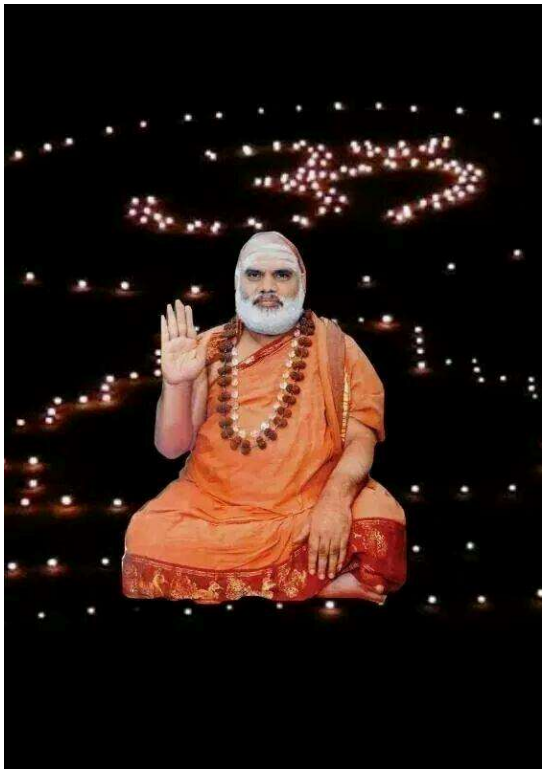

---देवताओं को एक विचार सूझा। उन्होंने बृहस्पति के पुत्र कच को शुक्राचार्य के पास भेजा, ताकि वह उस विद्या को सीख सके। कच शुक्राचार्य का शिष्य बन गया और गुरु की सेवा करने लगा। असुरों को यह बात हज़म नहीं हुई, इसलिए उन्होंने कच को कई तरह से परेशान किया। लेकिन कच ने सब कुछ सहन कर लिया और अपनी गुरु-सेवा जारी रखी।

---अंततः, उसने 'मृत संजीवनी' विद्या सीख ली और जब भी युद्धों में देवता मारे जाते, तो वह उन्हें पुनर्जीवित कर देता। इस बात का उल्लेख महाभारत में मिलता है।

---अतः, जो व्यक्ति ज्ञान के मार्ग पर आने वाली कठिनाइयों को सहन करता है और सीखने में दृढ़ रहता है, वह जीवन में अवश्य सफल होता है और सभी की सराहना प्राप्त करता है।

विद्योद्योगी गतोद्वेगः सेवया तोषयेद्गुरुम् ।
गुरुसेवापरः सेहे कायक्लेशदशां कचः ॥

vidyōdyōgī gatōdvēgaḥ sēvayā tōṣayēdgurum |

gurusēvāparaḥ sēhē kāyaklēśadaśāṁ kacaḥ ||

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

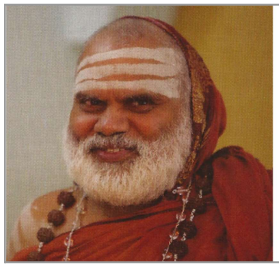

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

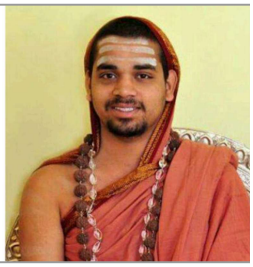

शास्त्रों, अच्छे जीवन के लिए सबसे सुरक्षित मार्गदर्शक

शास्त्रों मनुष्य को श्रेय मार्ग दिखाते हैं। हम अनुभव से जानते हैं कि जो व्यक्ति यथासंभव इस मार्ग पर चलता है, वह जीवन में सुखी रहेगा। जब मन इस बात को लेकर व्याकुल हो कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है तथा कोई कार्य अच्छा है या बुरा, तो शास्त्रों का अनुसरण करना सबसे अधिक लाभकारी होगा। मनुष्य को सही मार्ग पर चलने और बुराई से बचने के लिए शास्त्र अंतिम प्रमाण हैं।

Jagadguru Śankarācārya His Holiness Mahāsannidhānam Śrī Śrī Srī Bhāratī Tīrtha MahāswāmijiJan 1-2, 2013 @ Karimnagar Vijayayatra

गीता में श्रीकृष्ण परमात्मा कहते हैं:

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ||

किसी समय जो चीज़ धर्म मानी जाती है, परिस्थितियां बदलने पर वह अधर्म में बदल सकती है। इसलिए, शास्त्रों के अलावा और कुछ भी सही रास्ता नहीं दिखा सकता, ऐसा शंकर भगवद्पादाचार्य ने अपने भाष्यों में सराहनीय ढंग से कहा है।

अयं धर्मोऽयमधर्म इति शास्त्रमेव विज्ञाने कारणम् ।
यस्मिन् देशे काले निमित्ते च यो धर्मोऽनुष्ठीयते स एव देशकालनिमित्तान्तरेष्वधर्मो भवति ।
तेन शास्त्रादृते धर्माधर्मविषयं विज्ञानं न कस्यचिदस्ति |

यदि कोई मनुष्य धर्म और अधर्म में अन्तर न जानते हुए मनमौजी जीवन व्यतीत करता है, तो उसकी बुद्धि तामसी मानी जाती है।

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसाऽऽवृता ।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ।

इसलिए, यदि लोग, अच्छे और बुरे में विवेक करते हुए, यथासंभव शास्त्रों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें, तो वे इस लोक और परलोक में सुखी रहेंगे।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

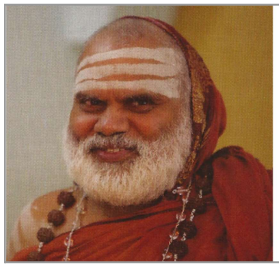

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

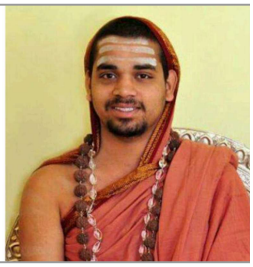

Anugraha Bhashanam

सही मार्ग पर बने रहें

गीता में श्रीकृष्ण परमात्मा कहते हैं:

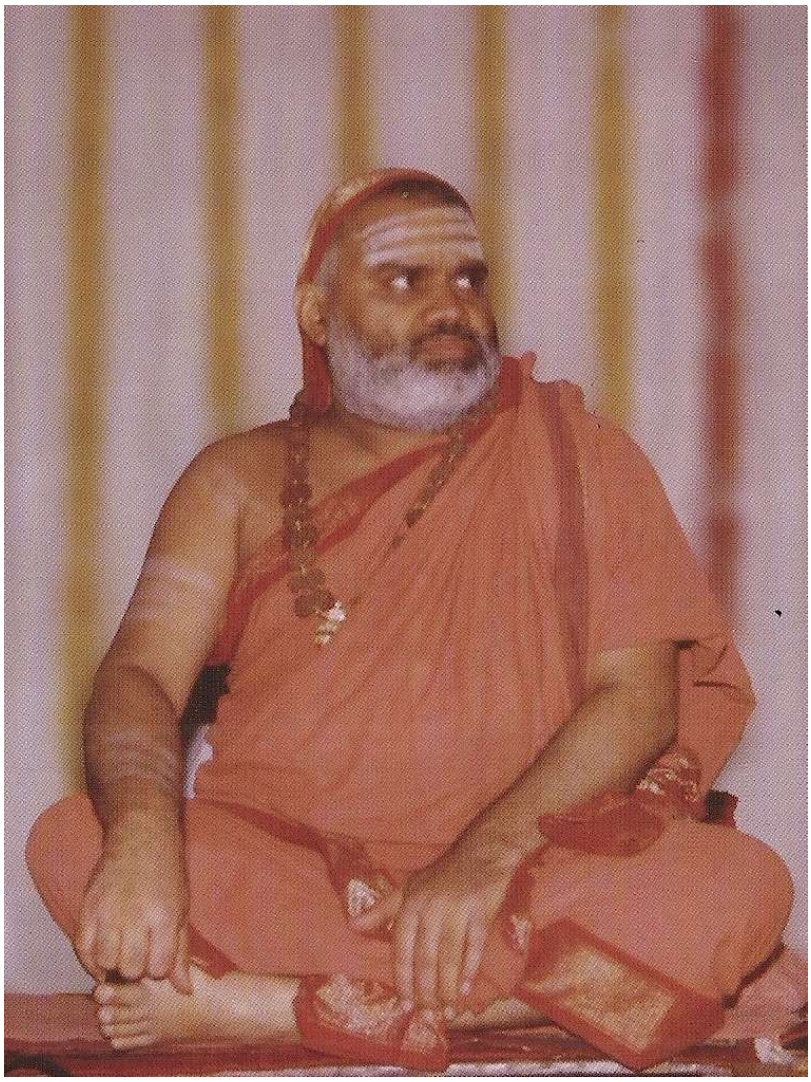

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः

अर्थात, जो दूसरों को सही राह दिखाने में सक्षम है, लोग उसी का अनुसरण करते हैं। इसलिए उच्च पदों पर बैठे लोगों को हमेशा धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। यदि वे ज़रा भी चूके तो इसका दूसरों पर भी बहुत बुरा असर पड़ेगा।

कालिदास के रघुवंश में महाराज दिलीप ने 99 अश्वमेध यज्ञ पूरे कर लिए थे और सौवां यज्ञ शुरू कर रहे थे। इसके पूरा होने पर उन्हें इंद्र का पद प्राप्त हो सकता था।

लेकिन देवेन्द्र, जो ऐसा नहीं चाहते थे, ने यज्ञ-घोड़े पर कब्जा कर लिया।

इस पर महाराज दिलीप के पुत्र युवराज रघु, देवेन्द्र से कहते हैं:

पथः **श्रुतेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्**

"सज्जन लोग, जिन्हें दूसरों को सही रास्ता दिखाना है, वे स्वयं गलत कामों में लिप्त नहीं होंगे। क्या वे ऐसा करेंगे?"

इसलिए, मनुष्य हर परिस्थिति में धर्म मार्ग पर चलना चाहिए। दूसरी ओर, जो इसे भूल जाता है और यह सोचकर गलत काम करता है कि कोई उससे सवाल नहीं करेगा, उसका कोई सम्मान नहीं करेगा।

सभी लोग इस सत्य को समझें और अपनी स्थिति की परवाह किए बिना, सन्मार्ग पर चलें और श्रेय प्राप्त करें।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

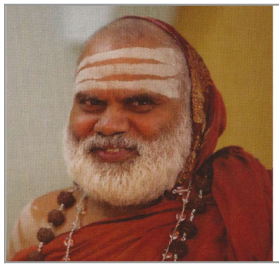

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

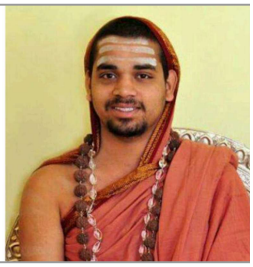

Anugraha Bhashanam

स्वच्छ, पवित्र मन ईश्वर को प्रतिबिम्बित करता है

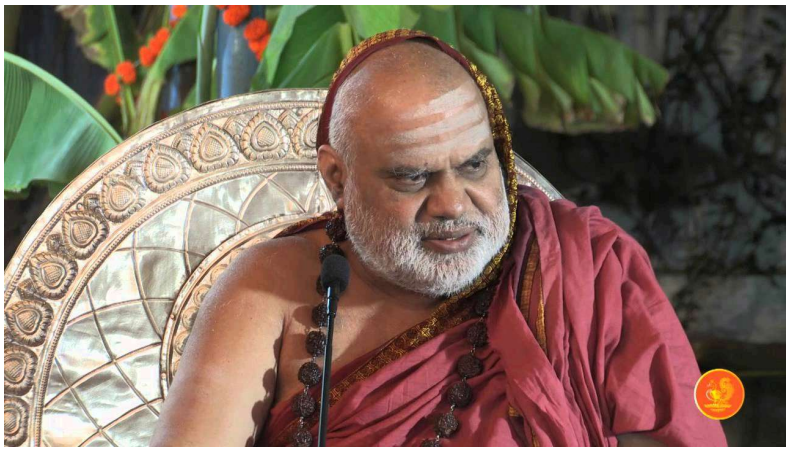

भगवान सब कुछ जानते हैं। वे हर जगह हैं। वे परिवर्तन, सृजन, विनाश, समय और कारण से परे हैं। वे शाश्वत हैं। प्रह्लाद जैसे कट्टर भक्त उन्हें हर जगह देखते हैं। ऐसे व्यक्ति के मन से भी भगवान गायब नहीं होते।

गीता में भगवान कहते हैं:

यो मां पशयति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

लेकिन आजकल कुछ लोग पूछते हैं: "अगर परमेश्वर हर जगह है, तो उसकी महिमा हर जगह क्यों नहीं दिखाई देती?"

श्री शंकर भगवत्पादाचार्य उत्तर देते हैं:

सदा सर्वगतोऽप्यात्मा न सर्वत्रावभासते ।

बुद्धावेवावभासते स्वच्छेषु प्रतिबिम्बवत् ॥

यद्यपि भगवान सर्वव्यापी हैं, फिर भी उनकी कृपा केवल शुद्ध बुद्धि द्वारा ही अनुभव की जा सकती है। शुद्ध बुद्धि वह है जिसमें सभी वासनाएँ (पूर्व प्रवृत्तियाँ और संस्कार) नष्ट हो गई हों और इच्छाएँ समाप्त हो गई हों। गुरु के उपदेश के फलस्वरूप व्यक्ति का मन निर्मल हो गया हो। ऐसा व्यक्ति ही भगवान की कृपा से लाभान्वित हो सकता है।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अपने चेहरे का प्रतिबिंब केवल दर्पण में ही देख सकता है, लकड़ी या दीवार में नहीं। प्रतिबिंब भी इस बात पर निर्भर करेगा कि दर्पण कितना साफ और स्वच्छ है। परमात्मा भी ऐसा ही है। उनकी उपस्थिति और कृपा व्यक्ति के मन की शांति के अनुरूप होगी।

यथा हि श्लोके तुल्येऽपि मुखसंस्थाने न काष्ठकुड्यादौ मुखं आविर्भवति, आदर्शादौ तु स्वच्छे स्वच्छतरे च तारतम्येन आविर्भवति ; तद्वत् ॥

सभी लोग इसे अच्छी तरह समझें, साधना के माध्यम से अपने मन को शुद्ध करें और आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रगति करें।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

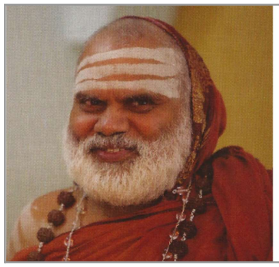

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

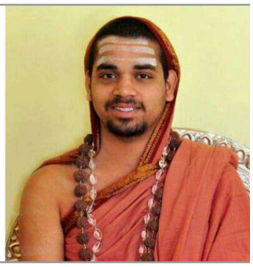

Anugraha Bhashanam

केवल उन लोगों को परामर्श दें जो स्वीकार करने के लिए इच्छुक हैं

इस दुनिया में सभी लोग सभी बातें नहीं जानते। हमारे पूर्वजों ने इस तथ्य को इस प्रकार बताया है: **न हि सर्वः सर्वं जानाति.** कोई व्यक्ति कुछ जानता हो सकता है, और कुछ नहीं भी जानता हो सकता है। जो हम नहीं जानते, उसे हमें दूसरों से सीखना चाहिए, और जो हम जानते हैं, उसे दूसरों को बताना चाहिए। लेकिन कुछ लोग दूसरों से सीखने के लिए इच्छुक नहीं होते। हमें ऐसे लोगों को सलाह देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। वे न केवल हमारी अच्छी बातों को नकारेंगे, बल्कि हमारा अपमान भी करेंगे।

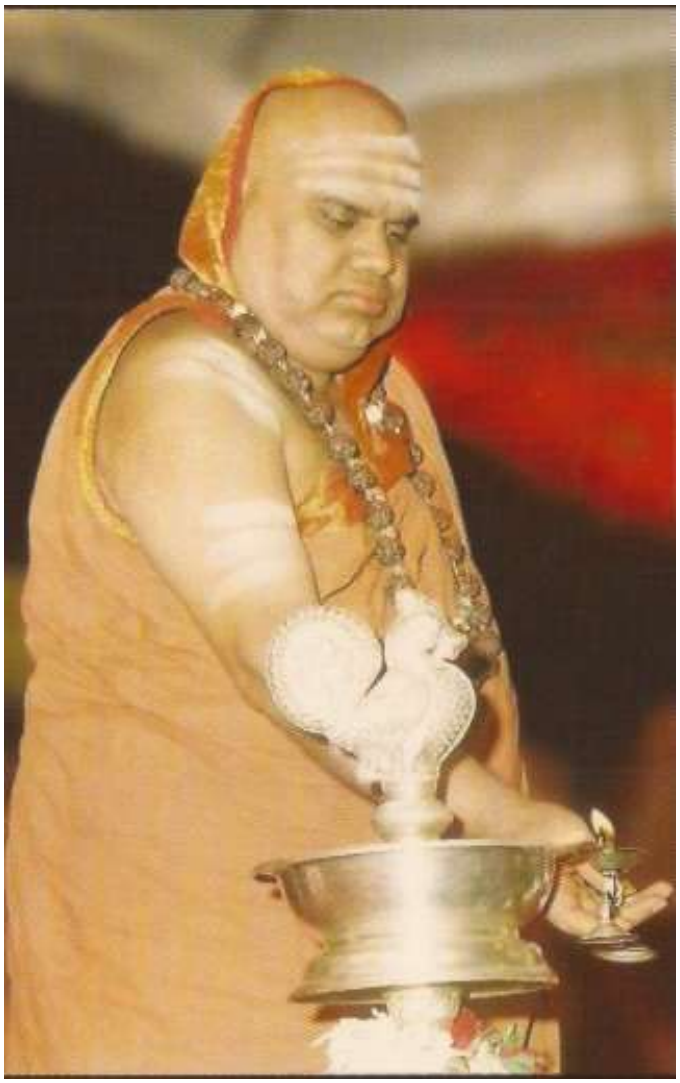

श्रीमद् रामायण का उदाहरण लीजिए। विभीषण ने रावण को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया, लेकिन रावण ने उनकी सलाह को अनसुना कर दिया और विभीषण को अपमानित किया।

इसी प्रकार, महाभारत में कई लोगों ने दुर्योधन को धर्म का मार्ग सिखाने का प्रयास किया; लेकिन उसने सभी परामर्शों की अवहेलना की। हमें ऐसे लोगों को शिक्षित करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

यदि आप किसी सफ़ेद कपड़े को रंग से रंगते हैं तो वह रंग को सोख लेता है, लेकिन रंगीन कपड़ा किसी अन्य रंग को आसानी से स्वीकार नहीं करता। इसलिए हमें केवल उन्हीं को सलाह देनी चाहिए जो हमारी बात मानने को तैयार हों। बाकी लोगों को सलाह देने से निवृत्त होना ही बेहतर है।

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् ।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा ॥

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

Our Website link : https://voiceofjagadguru.com/voj/

Telegram Channel : https://t.me/voiceofjagadguru

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: https://chat.whatsapp.com/Ly4wIaTu8Kc3sjjEYU8KGu

YouTube Channel : https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram